दोनों पक्षों की भारी क्षति होने पर भी अन्त में अर्जुन युद्ध में विजयी रहेगा। यहाँ यह भी इंगित है कि अजेय समझे जाने वाले भीष्म तक का विनाश हो जायगा। इसी प्रकार कर्ण भी मारा जायगा। युद्ध में भीष्म आदि विपक्षीय योद्धा ही काल के ग्रास नहीं बनेंगे; वरन् अर्जुन के पक्ष के बड़े-बड़े योद्धा भी वीरगति को प्राप्त होंगे।

यथा नदीनां बहवोऽम्बुवेगाः
समुद्रमेवाभिमुखा द्रवन्ति।
तथा तवामी नरलोकवीरा
विशन्ति वक्त्राण्यभिविज्वलन्ति।।२८।।

यथा=जैसे; **नदीनाम्**=नदियों के; **बहवः**=अनेक; **अम्बुवेगाः**=जल-प्रवाह; **समुद्रम्**=समुद्र की; **एव**=ही; **अभिमुखाः**=दिशा में; **द्रवन्ति**=दौड़ते हैं; **तथा**=उसी भाँति; **तव**=आपके; **अमी**=वे सब; **नरलोकवीराः**=मानवसमाज के राजा; **विशन्ति**=प्रवेश करते हैं; **वक्त्राणि**=मुखों में; **अभिविज्वलन्ति**=प्रज्वलित।

अनुवाद

जिंस प्रकार नदियों के जलप्रवाह समुद्र की ओर दौड़ते हैं, वैसे ही ये सब शूरवीर आपके प्रज्वलित मुखों में प्रवेश कर रहे हैं।।२८।।

यथा प्रदीप्तं ज्वलनं पतंगा
विशन्ति नाशाय समृद्धवेगाः।
तथैव नाशाय विशन्ति लोका-
स्तवापि वक्त्राणि समृद्धवेगाः।।२९।।

यथा=जैसे; **प्रदीप्तम्**=देदीप्यमान; **ज्वलनम्**=अग्नि में; **पतंगाः**=कीट; **विशन्ति**=प्रवेश करते हैं; **नाशाय**=नाश के लिए; **समृद्धवेगाः**=अति वेग से; **तथा**=वैसे; **एव**=ही; **नाशाय**=अपने नाश के लिये; **विशन्ति**=प्रवेश करते हैं; **लोकाः**=ये सब लोग; **तव**=आपके; **अपि**=भी; **वक्त्राणि**=मुखों में; **समद्धवेगाः**=पूर्ण वेग से।

अनुवाद

मैं देखता हूँ कि ये सब उसी प्रकार नाश के लिए पूर्ण वेग से आपके मुखों में प्रवेश कर रहे हैं, जैसे पतंग अपने नाश के लिए प्रज्वलित अग्नि में वेग से गिरते हैं।।२९।।

लेलिह्यसे ग्रसमानः समन्ता-
ल्लोकान्समग्रान्वदनैर्ज्वलद्भिः।
तेजोभिरापूर्य जगत्समग्रं
भासस्तवोग्राः प्रतपन्ति विष्णो।।३०।।

लेलिह्यसे=चाट रहे हैं; **ग्रसमानः**=ग्रसन करते हुए; **समन्तात्**=सब ओर से;